श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल,
राजस्थान का उद्‌बोधन

शिक्षा विभाग एवं समस्त सबद्व कॉलेज द्वारा
नई शिक्षा नीति पर 101 वेबीनार

दिनांक 11 नवम्बर, 2020 **समय दोपहर : 12.00 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

आज की इस वर्चुअल वेबीनार के आयोजक मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर के कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह जी, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण परिषद् शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के अध्यक्ष डॉ. प्रसन्ना जी, शिक्षा विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संकाय अध्यक्ष प्रो. सी.आर. सुथार एवं डॉ. अल्पना सिंह जी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संस्कृत संकाय के अध्यक्ष प्रो. निरज शर्मा, कम्प्यूटर विज्ञान संकाय के सहायक प्रोफेसर डॉ. अविनाश पंवार, शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. मुनमुन शर्मा, विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष एवं विश्वविद्यालय के ऐलूमुनाई, 184 संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यगण एवं समस्त उपस्थित महानुभाव।

आप सभी को आज के इस वेबीनार आयोजन के लिए मैं बधाई देता हूँ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि अल्प समय में ही विश्वविद्यालय अपने प्रयासों से विकास की ओर तेजी से अग्रसर है।

मेरा यह मानना है कि शिक्षण संस्थाओं की पहचान वहां की सुन्दर इमारत और सुविधाओं से नहीं होती बल्कि वहां की चिन्तन परम्परा से होती है। शिक्षा की समर्थता का पैमाना भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों से ओतप्रोत मानव निर्माण है।

आचार्य का अर्थ ही है विद्यार्थियों में अपने आचरण से ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये जाएं जिससे विद्यार्थी संस्कारों की सीख ले सके।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को गढ़ना है। इसलिए वह केवल औपचारिक नहीं रहे बल्कि उसका संबंध व्यक्तित्व के निर्माण से भी हो। इसी से विद्यार्थियों में मौलिक सोचने की शक्ति विकसित होती है।

केन्द्र सरकार की नई शिक्षा नीति का निर्माण देशभर के 676 जिलों, 6600 विकास खण्ड, 2.50 लाख ग्राम पंचायतों, शिक्षकों तथा सामान्य व्यक्तियों से विचार विमर्श करने के पश्चात् किया गया है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् संभवतः यह ऐसी पहली शिक्षा नीति है, जिसमें इतने वृहद स्तर पर लोगों की सहभागिता सुनिश्चित की गयी है। महत्वपूर्ण यह भी है कि इसमें सहपाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के

साथ–साथ व्यवसायिक एवं गैर व्यवसायिक विषयों की खोज की अनुमति देने वाली लचीली पद्धति रखी गयी है।

मैं यह मानता हूँ कि देश में 34 साल बाद आई नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता की विचारधारा का पोषण करने वाली होने के साथ ही देश के दीर्घकालीन विकास में विद्यार्थियों की महत्ती भूमिका तय करने वाली है। यह पूरी तरह से भारतीय जन–मानस की भावनाओं, आंकाक्षाओं और अपेक्षाओं की पूर्ति करने वाली है। इसमें मातृभाषाओं में अध्ययन को प्रोत्साहन देने की जो बात है, उस पर विश्वविद्यालयों को व्यावहारिक रूप में कार्य करने की जरूरत है।

एक महत्वपूर्ण बात इस नई शिक्षा नीति की यह भी है कि इसमें विज्ञान, कला, संस्कृति के साथ भारतीय विचारधारा से जुड़े संस्कारों से संबद्ध अध्ययन की स्वतंत्रता दी गयी है। मेरा यह मानना है कि शिक्षा में विद्यार्थी की स्वयं की रूचि बेहद महत्वपूर्ण होती है। इसी से उसका कालान्तर में सर्वांगीण विकास संभव होता है।

नई शिक्षा नीति का मैंने विस्तार से अध्ययन किया है और मुझे लगता है, यह पूरी तरह से विद्यार्थी केन्द्रित है। इसमें स्पष्ट उल्लेख है कि न तो किसी भाषा को विद्यार्थी पर थोपा जायेगा और न ही किसी भाषा का विरोध किया जाएगा। मातृभाषा में अध्ययन की बात इसलिए मैं अत्यन्त महत्वपूर्ण मानता हूँ कि इसी से भारतीय भाषाओं का वास्तविकता में संरक्षण और संवर्धन हो सकेगा।

हम सभी जानते हैं कि बच्चा जिस भाषा में पहले–पहल घर में अपने माता–पिता से संवाद करता है, उसी में बेहतर शिक्षा प्राप्त कर कर सकता है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इससे विद्यार्थी व्यावहारिक रूप में अपने परिवेश से जुड़ा रहता है और बाद में जो शिक्षा अर्जित करता है, वह जीवनभर उसके काम आती है।

मैं विश्वविद्यालयों से आग्रह करता हूँ कि वे विज्ञान एवं तकनीकी तथा विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्रों के भी पाठ्यक्रम अपने यहां अंग्रेजी के साथ हिन्दी में भी विकसित करें। स्थानीय ज्ञान–विज्ञान से संबंधित शोध एवं अनुसंधान को भी अधिकाधिक मातृभाषाओं में लाने के प्रयास शिक्षण संस्थान करें। इससे हम अपनी

परम्परा और संस्कृति के साथ उपलब्ध ज्ञान की धरोहर को भविष्य के लिए भी और अधिक बेहतर ढंग से संरक्षित कर सकेंगे। नई शिक्षा नीति का भी प्रमुख उद्देश्य यही है कि हम विद्यार्थी हित में हमारी धरोहर को संरक्षित करें।

नई शिक्षा नीति में भारतीय कला और सांस्कृतिक विरासत की समझ बढ़ाने पर भी विशेष जोर दिया गया है। विद्यार्थियों के विषय चयन में स्वतंत्रता की बात भी इसमें बेहद महत्वपूर्ण है। पहले छात्र अपने मन का विषय नहीं पढ़ पाते थे और उन पर दूसरे विषय पढ़ने का दबाव बना रहता था।

लेकिन अब नई शिक्षा नीति में छात्र अपने मनपसंद विषय पढ़ेंगे तो उनमें आत्मविश्वास ही पैदा नहीं होगा बल्कि भविष्य में वह स्वयं अपने को समाज के लिए अधिक बेहतर रूप में कुछ देने के योग्य बनेंगे।

मेरा विश्वविद्यालयों से और उच्च शिक्षण संस्थाओं के कुलपतियों, संस्था प्रधानों से अनुरोध है कि वे अपने यहां कला, साहित्य और संस्कृति से जुड़े विषय विशेषज्ञों को बतौर अतिथि व्याख्याता बुलाएं और उनसे विद्यार्थियों को रू–ब–रू कराएं। नियमित पाठ्यक्रम को रूचिकर बनाने के लिए कला, साहित्य और संस्कृति से

जुड़े आयाम भी उसमें जोड़े। इसी से शिक्षा व्यापक उद्देश्यों को लिए सार्थकता प्राप्त कर सकेगी।

विश्वविद्यालयों को चाहिए कि वे नई शिक्षा नीति की मंशा को समझते हुए अपने यहां आधुनिक समय की मांग के अनुरूप ई–पाठ्यक्रम क्षेत्रीय भाषाओं में भी विकसित करें। वर्चुअल लैब विकसित करें और एक राष्ट्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी फोरम में अपनी अभी से भागीदारी सुनिश्चित करें।

शिक्षा से ही किसी देश का भविष्य तैयार होता है, स्वाभाविक ही है कि इसके लिए शिक्षा में सकल घरेलू उत्पाद का बड़ा हिस्सा होना चाहिए। इस नीति में देश की जीडीपी का छह फीसदी शिक्षा में लगाने का लक्ष्य इसीलिए रखा गया है।

उच्च शिक्षा में शोध के स्तर में गुणात्मक वृद्धि भी जरूरी है। नई शिक्षा नीति में मजबूत अनुसंधान संस्कृति हेतु एक शीर्ष निकाय के रूप में नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना की बात कही गयी है। एनआरएफ का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालयों के माध्यम से शोध की संस्कृति को सक्षम बनाना होगा।

मैं समझता हूँ देश में पहली बार ऐसा हुआ है जब स्वतंत्र रूप से शोध संस्कृति के विकास के लिए इस

तरह का प्रावधान शिक्षा नीति में किया गया है। विश्वविद्यालयों को चाहिए कि वे अपने यहां नवीनतम शोध और अनुसंधान की ऐसी संस्कृति विकसित करें जिससे विद्यार्थी बहुत सारी किताबों के संदर्भ से एक पुस्तक तैयार करने की सोच की बजाय अपने स्वयं के अनुभव, अध्ययन से मौलिक स्थापनाओं की ओर प्रवृत हो।

मुझे यह बताया गया है कि मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर अपने समीपवर्तीय स्थानों की आवश्यकताओं को जानने हेतु लगाातार वर्चुअल रूप से संवाद कर रहा है। इसी क्रम में आज चार जिलों में एक साथ 100 से अधिक महाविद्यालयों में नई शिक्षा नीति के 20 विषयों पर वेबीनार का आयोजन किया जा रहा है। यह महत्वपूर्ण है। मैं समझता हूँ विश्वविद्यालय में इस तरह की कार्य प्रणाली से छात्र–छात्राओं, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं अभिभावकों में विश्वास उत्पन्न होगा और वे अपनी क्षमता का आंकलन करने का एक अच्छा माध्यम भविष्य में विकसित कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय द्वारा अकादमिक उन्नयन के लिए अपने सम्बद्ध 184 महाविद्यालयो में वरिष्ठ एल्यूमीनई को सलाहकार बनाने की पहल प्रशंसनीय है। यह भी

महत्वपूर्ण है कि "एक दिन का मिशन" कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय ने एक दिन में परीक्षा करवा कर उसी दिन परीक्षा परिणाम घोषित करने का निर्णय किया है। अन्य विश्वविद्यालयों के लिए भी यह अनुकरणीय होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

विश्वविद्यालय ने औद्योगिक क्षेत्र में लखनऊ के सी. डी.आर.आई., एन.वी.आर.आई, सी.मेप, आई.टी.आर.सी. एवं अन्य सी.एस.आई.आर. शोध जैसी प्रमुख संस्थाओं की सहभागिता के साथ जो कार्य किया है उसकी मैं सराहना करता हूँ। इसके साथ ही मुम्बई बालीवुड से फिल्म जगत में अपने विद्यार्थियों को रोजगार दिलाने के लिए जो एम.ओ.यू. और संवाद किया जा रहा है वह भी प्रशंसा के योग्य है।

उदयपुर, सिरोही, प्रतापगढ, राजसमन्द ऐसे क्षेत्र हैं जहां के ग्रामीण एवं जनजातीय परिवेश की सांस्कृतिक धरोहर अनमोल है। यहां के जनजातीय समाज को मुख्य धारा से जोड़ा जाना जरूरी है। इसके लिए विश्वविद्यालय को अपने स्तर पर प्रयास करने चाहिए।

मुझे यह बताया गया है कि नई शिक्षा नीति को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने 101 नये

सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स प्रारम्भ किए हैं। इनमें एम. वॉक., फैशन डिजाईनिंग, डिप्लोमा इन गाईडेंस काउस्लिंग, ऐन्थ्रोपोलॉजी इत्यादि कई पाठ्यक्रम बेहद महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग एवं आर्किटेक्चर संकाय शुरू करना भी मैं महत्वपूर्ण मानता हूँ।

आज का यह वेबीनार इस बात का द्योतक है कि नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आप संकल्पबद्ध हैं। आज का यह 100 से अधिक महाविद्यालयों में आयोजित वेबीनार विश्वविद्यालय के "विजन और मिशन" को स्पष्ट करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों, छात्र–छात्राओं एवं एल्यूमीनई को इसके लिए मैं बधाई देता हूँ। मेरी आप सभी को शुभकामनांए।

धन्यवाद। जय हिन्द।